आगरा की सांगीतिक परम्परा

डॉ0 सुजीत देउघरीया
सह–प्राध्यापक, बनस्थली विश्वविद्यालय,
राजस्थान – 304022

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आगरा में संगीत की स्थिति का प्रचार–प्रसार ताज से भी पुराना है। जहां तक सुप्रसिद्ध आगरा घराने का प्रश्न है, कतिपय विद्वान इसकी उत्पत्ति इब्राहिम लोदी के काल से मानते हैं। आगरा नगर मुगल–कालीन रहा है जो अपनी अप्रतिम कृति ताज के कारण सुप्रसिद्ध है। यहॉ के बादशाह अकबर संगीत के अत्यधिक शौकीन होने के कारण भी यह नगर सांगीतिक क्षेत्र में अग्रणी रहा है। कहा जाता है कि बादशाह अकबर के विशिष्ट मित्रों में राजा रामचन्द्रजी का नाम सर्वप्रथम आता है। राजा रामचन्द्रजी के दरबार में तानसेन का गायन हुआ। उनके गायन की प्रसिद्धि सुनकर अकबर ने तानसेन को अपने दरबार में उनका गायन सुनने हेतु बुलाया। राजा रामचन्द्रजी ने घनिष्ठ मित्रता का परिचय देते हुए अपना बहूमुल्य उपहार तानसेन के रूप में अकबर को भेंट किया। तानसेन का अकबर के दरबार में पदार्पण उनके शासनकाल के सातवें वर्ष यानी सन् 1563 के लगभग हुआ।

तानसेन ने अकबर की प्रशंसा में बहुत से ध्रुपद रचे आगरा के ब्रजक्षेत्र में होने के कारण उनकी धुपद–गायकी लोकप्रिय थी। इनकी गायकी का विषय राधा–कृष्ण की लीलाओं के वर्णन, देवी–देवताओं की स्मृति, संतों–सूफियों और पीर–पैगम्बरों की स्तुति, संगीतशास्त्र एवं प्रकृति–सौन्दर्य के वर्णन, प्रताप–वर्णन, प्रबोध तथा वैराग्य इत्यादि से सम्बन्धित था। इनसे प्रभावित होकर बादशाह अकबर ने तानसेन को ''**कण्ठाभरण–वाणीविलास**'' की उपाधि से विभूषित किया और उन्हें अपने नव–रत्नों में शामिल किया। सुप्रसिद्ध गायक तानसेन ने आगरा में संगीत के प्रचार–प्रसार को बढ़ाया। लोग तानसेन की कला की प्रशंसा सुनकर उनकी गायिकी के प्रभाव से आगरा खिंचे चले आते थे। संगीत में तानसेन ही आगरा की प्रसिद्धि के प्रदीप थे, जिन्होंने अपनी लगन एवं साधना की वास्तविकता को समझकर उसे लोगों तक पहुॅचाया तथा संगीत को दूर–दूर तक ख्याति प्रदान कराई। संगीत की प्रारम्भिक स्थिति अत्यन्त ही दयनीय थी और समाज उसे हेय दृष्टि से देखता था। गानेवालों को समाज में अच्छा नहीं समझा जाता था। इसी दशा का रूप–परिवर्तन तानसेन ने अपनी कला के माध्यम से किया और उसे समाज में लोगों के सम्मुख प्रस्तुत कर कला का उत्कृष्ट रूप सामने रखा। आपने अपनी कला के सम्मोहन से समाज को संगीत से जोड़ने का प्रयास किया। इसी क्रम में **नत्थन खॉ** साहब को अपनी घराना–पद्धति (परम्परा) के लिए अथक प्रयास करने पड़े, ताकि संगीत के प्रति लोगों की जनरूचि बढ़े। इस कार्य में अनेक उस्तादों के सामूहिक प्रयासों से संगीत को बढ़ावा मिला। उस समय आगरा घराने के उस्तादों में ये कलाकार प्रसिद्ध रहे– **फैयाज खॉ (प्रेम पिया), महबूब खॉ (दरस पिया), तरस्सुख खॉ (विनोद पिया), विलास खॉ (प्रान पिया)** एवं **बसीर खॉ (रंगीले पिया)**। आधुनिक समय में **अकील अहमद खॉ साहब (मोहन पिया)** आदि संगीतज्ञ संगीत–जगत में प्रसिद्ध रहे। इन्हीं सब जिज्ञासुओं के प्रयासों ने ही भक्तिरस–पूर्ण ख्यालों का निर्माण कर आगरा घराने की परम्परा को आगे बढ़ाया।

आगरा संगीत के विषय में लोग यह मानते हैं कि आगरा को ग्वालियर क्षेत्र का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ था। यह भी कहा जाता है कि **घग्घे खुदा बख्शजी** ने ग्वालियर जाकर वहॉ **नत्थन पीर बख्श** से संगीत सीखकर अपनी आवाज के दोषों को दूर किया, जिससे कि ग्वालियर की छाप आगरा गायकी पर पड़ती प्रतीत हुई। लेकिन फिर भी दोनों

गायकी में अन्तर था और दोनों अलग–अलग घरानों से जानी जाने लगी। संगीत विषय की अनिवार्यता ने घरानों की पद्धति के महत्व को दिनों–दिन कम किया। बाकी कसर विभिन्न संस्थाओं की स्थापनाओं ने पूरी की।

आधुनिक संगीत की स्थिति को, आगरा घराने के होते हुए भी, ग्वालियर घराने से संबंधित कतिपय मराठी संगीतकारों ने अपना अभूतपूर्व योगदान दिया और संगीत की दशा को सुधारने के लिए निरन्तर प्रयास होते रहे। कहते हैं कि कोई भी कार्य क्यों न हो, वह सहयोग के बिना अधूरा ही रहता है। सहयोग द्वारा किये गये कार्य सदैव ही सराहनीय होते हैं।

आगरा में संगीत की दशा को बदलने के लिए विभिन्न कलाकारों ने, जैसे– **पं. रामस्वरूप जी**, **लल्लू सिंह जी** एवं **जीवनसिंह पालखे जी** इत्यादि अनेक संगीतज्ञों ने संगीत के क्षत्र में अपना पूर्ण योगदान दिया। इसी आगरा क्षेत्र में अपने योगदान का श्रेय देने के लिए एक कड़ी के रूप में पं. **रघुनाथ तलेगांवकर** जी का नाम भी नहीं भुलाया जा सकता। भारतीय संस्कृति में संगीत की महत्ता बताना भले ही आज के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण न हो, परन्तु जिस प्रकार संगीत की महिमा को पुनः प्रतिष्ठा दिलाने का महती कार्य जो **पं. विष्णु दिगम्बर** जी ने किया था, उसी कार्य को आगरा–परिक्षेत्र में गति प्रदान करने का कार्य किया **पं. रघुनाथ महीपति तलेगांवकर जी** ने।

वाग्देवी की असीम अनुकम्पा से सतत् प्रवाहिनी संगीत–धारा के प्रचार–पसार एवं उसे चिरकाल तक जीवित रखने हेतु भारतीय संगीताकार पर अनेक देदीप्यमान नक्षत्र उदित हुए हैं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन वाग्देवी के चरणों में अर्पित कर दिया। आगरा परिक्षेत्र में संगीत को पुनर्जीवित करके उसे पुनः सरस बनाने में भी कतिपय कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्हीं में से एक हैं– **पं. रघुनाथ तलेगांवकर जी**, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ही संगीत–जगत् को समर्पित कर दिया। पं. रघुनाथ जी वास्तविक रूप में त्याग एवं बलिदान का एक ज्वलन्त उदाहरण है। आपके सम्पूर्ण जीवन का प्रथम भाग आर्थिक विपन्नतामय एवं संघर्षपूर्ण रहा है। ऐसी विषम एवं कटु परिस्थितियों में भी आपका कला–मन सतत् विकसित, पल्लवित एवं पुष्पित होता रहा।

सहायक ग्रंथ

रमण लाल मेहता, *आगरा घराना : परम्परा, गायकी और चीजें, बरोदा : महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, 1969*